जुमा की फज़ीलत

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''जो शख्स अच्छी तरह वजू करके जुमा की नमाज़ के लिये हाज़िर हुआ, ग़ौर से जुमा का खुतबा सुना और खामोश रहा तो उसके इस जुमा से अगले जुमा तक के गुनाह मआफ कर दिये गए और इसके अतिरिक्त तीन दिनों के गुनाह भी और जिसने कंकरी को छुवा तो उसने लग्व (अनावश्यक) काम किया।'' इस्लाम में जुमा के दिन और जुमा की नमाज़ का एहतमाम करने पर बल दिया गया है। एक हदीस में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुमा के दिन को उम्मते मुहम्मदिया के लिये अल्लाह का खुसूसी इंआम क़रार दिया है। एक दूसरी हदीस में जुमा को हफ्ते की ईद कहा गया है।

उपर्युक्त हदीस जिससे इस लेख की शुरूआत की गई है से भी यह स्पष्ट होता है कि एक मोमिन को जुमा के दिन नहा धो कर पहले अच्छी तरह वजू करना चाहिए उसे नमाज़ के लिये पहली घड़ी में मस्जिद जाना चाहिए, बैठ कर इमाम के खुतबे को गौर से सुनना चाहिए। इस दौरान अगर कोई कंकरी या तिंका नज़र आए तो इसे हटाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए क्योंकि इस से जुमा के खुतबे को सुनने में एकाग्रता में खलल पैदा होगा जिसे शरीअत ने नापसन्द किया है। जो शख्स जुमा की नमाज़ और उसका खुतबा सुनने का एहतमाम करने में कामयाब हो गया उसके लिये खुश्खबरी है इस एहतमाम से लगभग दस दिनों के गुनाह मआफ हो जाएंगे।

हम लोगों में पायी जाने वाली बेशुमार कमियों खामियों में एक खामी यह भी है कि जुमा के शिष्टाचार का ख्याल नहीं करते। कुछ लोग जुमा के दिन अपना वक़्त बच्चों को खामूश कराने में लगा देते हैं और खतीब जेहनी उलझन का शिकार रहता है। ऊपर बयान की गई हदीस में कंकरी को छूने के काम को भी लग्व (फालतू) करार दिया गया है तो फिर खुतबे के दौरान शोर गुल करने से क्या नुकसानात होते होंगे इसका अन्दाज़ा लगाना कुछ भी मुश्किल नहीं है। एक हदीस में इस से बड़ी खुश्खबरी सुनाई गई है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें, एक जुमा दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक इस दर्मियानी मुददत में होने वाले गुनाहों के लिये प्रायिश्चित है शर्त यह है कि महा पाप से बचा जाए। (सहीह मुस्लिम ५-२३३) यह हदीस हम गुनेहगारों के लिये किसी खुश्खबरी से कम नहीं है दिन रात हम से पाप होते रहते हैं ऐसे में अगर दयालु रब से गुनाहों की प्रायिश्चत और मआफी का इन्तेज़ाम न हो तो हमारे लिये खसारा निचिश्त है। उपर्युक्त हदीस हम को सन्देश दे रही है कि अगर हमें गुनाहों के बोझ तले दब जाना मनजूर नहीं है तो हम हर हाल में पांचों वक़्त की नमाज़ों, जुमा के दिन की इबादत और दूसरी इबादतों का आख़िरी हद तक एहतमाम करें इसके बिना न हमारे गुनाहों का बोझ कम हो सकता है और न हम उसकी खुशी के पात्र करार पा सकते हैं। दिन भर में पांचों वक़्त की नमाज़ें हम में से कुछ लोगों को बोझ लगती हों गी लेकिन यह हमारे रब की तरफ से बन्दों पर खास करूण एवं कृपा है कि उसने हम सब को दिन रात में पांच बार अपने दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया है ताकि बन्दे को उसकी सहायता प्राप्त हो जाए और हम स्वयं नमाज़ की पाबन्दी करने के साथ अपने दूसरे भाइयों को नमाज़ के लिये प्रेरित करें, अल्लाह तआला हम सबको इस की क्षमता दे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

जनवरी 2022 वर्ष 33 अंक 01

जुमादल उख़रा 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑ वार्षिक राशि 100 रुपये

❑ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. जुमा की फ़ज़ीलत 2

2. सऊदी अरब.... 4

3. अलहमूदुलिल्लाह कहते रहें 7

4. अहम एलान 9

5. जन्नत 11

6. व्यर्थ सवाल से बचना चाहिए 15

7. खुश्गवार घरेलू जीवन के नियम 18

8. इस्लाम धर्म के अनुपम उपदेश एवं शिक्षाएं 21

9. राष्ट्रीय सद्भावना और गैर मुस्लिमों के अधिकार 23

10. मौलाना अब्दुश शकूर साहब का निधन 25

11. आंखों की अहमियत 26

12. अपील 27

14. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

- सऊदी अरब -
हक़ बयानी व किरदार कुशी के आइने में

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

सऊदी अरब अपनी व्यापक और सर्वांगीण सेवाओं की वजह से इस्लाम जगत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक ऊंचा और प्रमुख स्थान रखता है। अगर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो पिछली एक शताब्दी में जीवन के हर विभाग में वहां पर जो आशचर्यजनक विकास और प्रगति हुई है इससे हर मुसलमान को खुशी और हर्ष होता है। विशेष रूप से हरमैन शरीफैन की जियारत करने वाले, हाजी और उमरा करने वालों का स्वागत, उनकी सेवा, सत्कार और उनकी राहत व आराम के लिये दिन बदिन जो प्रयास हो रहे हैं उनको देखकर वहां की हुकूमत और शासकों के लिये दिल से दुआएं निकलती हैं।

इसके अलावा ज्ञान और टेक्नालोजी के अध्याय में भी सऊदी अरब की सेवाएं अविस्मरणीय हैं। उन्होंने तमाम इस्लामी ज्ञान और चारों इमामों सहित तमाम इमामों के उलूम पर भव्य सेवाएं अंजाम दीं। और सारे इस्लामी धरोहर को साधारण कर देने का अभूतपूर्व कारनामा अंजाम दिया।

सऊदी अरब की धार्मिक सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सऊदी अरब की तरफ से सही अक़ीदा और कुरआन व हदीस के प्रचार व प्रसार के लिये संस्थाओं की स्थापना, दुनिया की लगभग हर भाषा में कुरआन करीम के अर्थों के प्रचार, इस्लामी शिक्षाओं के विकास और दावत व इरशाद (प्रचार व प्रसार) के मैदान में उसकी स्पष्ट उपलब्धियां बेमिसाल और अभूतपूर्व हैं।

सऊदी अरब की कल्याणकारी और मानवीय सेवाएं भी सुनेहरे शब्दों में लिखने योग्य हैं जो कि संसार के लगभग सभी देशों के अन्दर वहां की हुकूमतों के माध्यम से जारी हैं। यह कल ही की बात तो है जब उसने तबाह हाल अफगानिस्तान के पुनर्वास के लिये दुनिया का सबसे बड़ा सहायता पैकेज दिया और सहायक व इमदादी जहाज़ों से आस्मानी व फिज़ाई पुल निमार्ण करवाये और दुनिया के जिस देश में भी आपदा व विपदा आती है सऊदी अरब उनकी सहायता और सहयोग के लिये आगे आगे रहती है। यही वजह है कि प्रिय देश भारत समेत दुनिया के हर छोटे बड़े देशों का सऊदी अरब से दो पक्षीय दोस्ताना संबन्ध ही नहीं बल्कि तिजारती और सांस्कृतिक संबन्ध बराबरी के आधार पर स्थापित हैं।

जहां तक देश के साधारण व असाधारण जनता की सेवा और उनके लिये सुहूलतों को उपल्ब्ध कराने का संबन्ध है तो इस मैदान में भी उसका द्वितीय नहीं है जिस पर उनको अल्लाह तआला का शुक्र अदा

करना चाहिए और सकारात्मक, एक दूसरे का सहयोग और भलाई का काम अंजाम देना चाहिए। अफसोस कि बाज तत्व नाशुकरी करते हैं। आज सऊदी अरब का कोई भी वासी भीक नहीं मांगता। दौलत की रेल पेल है। कोरोना काल में जिस तरह सऊदी अरब ने महामारी पर नियंत्रण किया है और शत प्रतिशत और अन्य सुहूलियात को निश्चित बनाया है वह भी अपनी मिसाल आप है।

अभी चन्द वर्षों में इस्लाम विरोधी तत्वों की तरफ से इस्लाम और मुसलमानों को आतंकवाद के नाम पर जिस तरह से लांक्षित करने की कोशिश की गई और विभिन्न पहलुओं से इस्लाम और मुसलमानों को आतंकवाद की आड़ में बदनाम करने का प्रयास किया गया वह किसी से गुप्त नहीं है। सऊदी अरब ने ऐसे हालात में अन्तरधर्मीय वार्ता का आरंभ किया। आतंकवाद की निन्दा की और मुसलमानों का दिफा करते हुए इस्लाम का सहीह परिचय पेश किया यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी आतंकवाद विरोधी गतिविधियों पर उसकी सराहना करते हुए सऊदी अरब को अनुसरणीय क़रार दिया।

लेकिन विश्व स्तर पर सऊदी अरब के खिलाफ नकारात्मक प्रौपैगण्डा, उसकी महान मानवीय, ज्ञानात्मक और धार्मिक सेवाओं को लोगों की नज़रों से ओझल कर देने की कुचेष्ठा हो रही है। यह एक हकीकत है कि उप महादीप में अधिकांश लोग सऊदी अरब की सेवाओं से अनभिज्ञ हैं जिस की वजह से ज़्यादातर लोग उसके खिलाफ कुछ लोगों के गलत प्रोपैगण्डों और अफवाहों का आसानी से शिकार हो जाते हैं जबकि एक मुसलमान होने के नाते हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि जिस सरज़मीन से हमारा आस्था का और जजबाती रिश्ता है, उसके बारे में कोई खबर आए तो उस खबर की तह में जाना और असल हकीक़त का पता लगाना चाहिए कि जो कुछ भी स्वार्थ और दुश्मनी में उसके बारे में कहा जा रहा है वह कहां तक सहीह है और किस हद तक दुरूस्त है? पवित्र कुरआन ने भी हमें आदेश दिया है कि हम ऐसे अवसर पर असल सच्चाई का ज्ञान हासिल करें। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हें कोई फासिक़ खबर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो, ऐसा न हो कि अज्ञानता में किसी कौम को ईज़ा (दुख) पहुंचा दो, फिर अपने किये पर पश्चाताप उठाओ'' (सूरे हुजुरात-६)

पवित्र कुरआन की यह आयत हमें मार्गदर्शन करती है कि खबरों के बारे में सूझ बूझ और बुद्धिमत्ता से काम लेना चाहिए क्योंकि आज की प्रोपैगण्डा की दुनिया में एक छोटी से खबर को बड़ी खबर और एक बड़ी खबर को एक छोटी खबर बना दिया जाता है बल्कि अधिकतर औक़ात खबरें गढ़ ली जाती हैं।

इस सिलसिले में एक गलत फहमी आम है कि हम में से बहुत से हज़रात दूसरों की कमियों को बयान करने, लोगों के राज़ फाश करने और उनकी गलतियों को उजागर करने को सत्य बयान करने का नाम देते हैं और यहां तक कहते हैं कि हम इस बात को सहन नहीं कर सकते जबकि यह मन का धोका है और हक बयान करने के नाम पर दूसरों का अपमान है, उनके

गुप्त ऐबों को फैलाने के समान है और अपनी अना की तसकीन है क्योंकि दूसरों के ऐबों को छुपाने का हुक्म दिया गया है और किसी को अपमानित करने से मना किया गया है। सहन तो वास्तव में नागवार और बुरी बातों को ही किया जाता है। हकीकत में जहां तक हक़ बयान करने का संबन्ध है वह अपने निजी मामले से संबन्धित है चाहे वह अपनी सफाई में हो या अपनी कमजोरी और कोताही को बयान करने की हैसियत से हो। शादी विवाह, क्रय-विक्रय और किसी मामले में राय मश्वरा देने के अलावा आम हालात में दूसरों की कमियों और खामियों को अपमानित ढंग से बयान करना जायज़ नहीं है। सुनी सुनाई बातों और बिना छान बीन और बदगुमानी पर आधारित बातों को बुनियाद बना कर हक़ बयान करने के नाम पर किसी की किरदार कुशी (चरित्र और छवि को कलंकित) करना, बुराई से रोकने का नाम देना, दूसरों को दुख पहुंचाने और गुनेहगार करने के अलावा और क्या हो सकता है। ऐसे में सऊदी अरब जिस की महान सेवाओं के बारे में उपर्युक्त पंक्तियों में इशारा किया गया है, उसके बारे में हसद व जलन रखने वालों की तरफ से प्रोपैगण्डा करना और उसकी बाज मजबूरियों की वजह से आरोपित करना और उसके खिलाफ मुफसिदाना और बागियाना तरीका अपनाना, सुधार के नाम पर बड़ा मुफसिदाना इक़दाम है न कि इस्लाही कारनामा। यह अज्ञानता और लापरवाही में एक शुभ चिंतक और महान देश की अक्षम्य किरदार कुशी और नाशुकरी है।

इसलिये हमें किसी भी गुमराह कर देने वाली खबर से बचना चाहिए और एक ऐसा देश जिसकी सेवाओं का दायरा काफी व्यापक है उसको स्वीकार करना और उसका उल्लेख बेहतर अंदाज़ में करना चाहिए। जो कमियां हक़ीक़त में हमारे सामने आएं उनकी गंभीरता से दीनी, ज्ञानात्मक और आचरण की सीमा में समीक्षा कर उपदेशात्मक और हकीमाना अन्दाज़ में नसीहत का काम अंजाम देना चाहिए। इस सिलसिले में हर हाल में भलाई का हुक्म और बुराई से रोकने के सिद्धांत और शर्तों का अत्यंत पाबन्द होना हमारा फर्ज़ है।

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

अलहम्दुलिल्लाह कहते रहें

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

ज़िक्र अज़कार (जाप) हो या दूसरे अच्छे कर्म और इबादतें, इनके कबूल होने के लिये ज़रूरी है कि हमें इन्हें अल्लाह से मुहब्बत करते हुए, उसके अज़ाब व सज़ा से डरते हुए और उससे सवाब व पुण्य की आशा व लालच में करें। अल्लाह तआला ने इन तीन स्तंभों (मुहब्बत, भय, आशा) को सूरे फातिहा में संकेत में बयान फरमाया है। मिसाल के तौर पर (अलूहम्दुलिल्लाही रब्बिल आलमीन) इस वाक्य में मुहब्बत पाई जाती है वह इस तरह कि जब अल्लाह हमारा पालनहार और शुभचिंतक है तो उससे मुहब्बत करनी चाहिए क्यों कि मुहब्बत उसी से की जाती है जो अपनी नेमत निछावर करता है और दया व करूणा का मामला करता है। और ''अलूहम्दू'' की परिभाषा में भी मुहब्बत का यही अर्थ निहित है।

''हम्द'' कहते हैं प्रशंसित की मुहब्बत व सम्मान के साथ उसकी महान खूबियों और साधारण इनआमात को याद करते हुए उसकी सराहना करना।

''अर्रहमानिर्रहीम'' में आशा व उम्मीद है। जब वह अल्लाह सबसे बड़ा कृपालू और अत्यंत दयावान है तो बन्दे के दिल में उसकी रहमत की प्राप्ति की आस व आशा में वह अल्लाह से निकट होने का प्रयास करता है।

''मालिकी यौमिद्दीन'' इस वाक्य में ईश्वर से भय का तत्व पाया जाता है बन्दा जब यह समझता है कि सज़ा और बदले का एक दिन तय है जिस दिन नेक लोग अल्लाह के इनआमात से सम्मानित होंगे और बदकार दण्डित किये जाएं गे जिस दिन ज़िन्दगी के एक एक क्षण का हिसाब किताब हो गा और बदले के उस दिन का मालिक अल्लाह है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''उस दिन कोई शख्स किसी दूसरे के लिये कुछ भी न कर सकेगा'' (सूरे इनफितार-१६)

तो इस हिसाब व किताब और बदला व सज़ा के दिन की कल्पना और अल्लाह की पकड़ से इस पर भय तारी हो जाता है और वह कांप उठता है।

आमाल के कुबूल होने के इन स्तंभों को अपने सीने में बन्दा यह स्वीकार करता है ''ऐ अल्लाह(इबादत की इन तीनों शर्तों के साथ) हम तेरी ही इबादत करते हैं'' और इस की पुष्टि इस आयत से भी होती है ''जिन को यह लोग पुकारते हैं वह तो स्वंय ही अपने रब की तरफ वसीला (माध्यम) तलाश करते हैं कि कौन उसके ज़्यादा क़रीब हो जाए और उसकी रहमत की उममीद करते हैं और उसके अज़ाब से भयभीत रहते हैं।'' (सूरे इसरा-५७)

स्पष्ट है कि अल्लाह का वसीला और उसकी निकटता हमें उस वक़्त हासिल हो गी जब हम उससे मुहबबत करेंगे उसकी रहमत की आस लगाएं उसके अज़ाब से डरते हुए उसके प्रिय कर्म को अंजाम देंगे और हमारे दिलों में उस अल्लाह की मुहब्बत व महानता और उसका भय उसी समय पैदा होगा। हम उसकी खालिस इबादत और उसके

निकटता की प्राप्ति का प्रयास उसी वक़्त करेंगे जब हमें उसका ज्ञान होगा और उस असमा व सिफात (नामों और विशेषताओं) का इल्म हो गा। हम जितना ज़्यादा अल्लाह को पहचान लेंगे उतना ही हम उसे याद भी करेंगे और उससे करीब भी होंगे और जब उसे नहीं पहचानें गे तो उसे भूल जाएंगे और दूर भी हो जाएंगे।

आज संसार वाले जो अल्लाह के दर को छोड़ कर उसके बन्दों के आगे आसतानों और चौखटों को थामे हुए हैं, रूकू व सजदे कर रहे हैं, मुरादें मांग रहे हैं इसकी बड़ी वजह यह है कि वह अनभिज्ञ हैं। अल्लाह को नहीं पहचानते, उसे अल्लाह के सामर्थ, ज्ञान और शक्ति का इल्म नहीं है। अल्लाह ने सच फरमायाः और उन्होंने अल्लाह की उसके मक़ाम व मर्तबे के मुताबिक क़द्र नहीं की'' (सूरे जुमर-६७)

और इन्सान की महानता की यह दलील है कि वह अल्लाह की तस्बीह व तहमीद बयान करता रहे उसी से मुहब्बत और अक़ीदत का इज़हार करे, उसी से लौ लगाए, उसी के सामने सर झुकाए और उसी की हम्द (प्रशंसा) के तराने गाये।

''अल्हम्दुलिल्लाह'' सर्वश्रेष्ठ दुआ है और प्रिय कलिमात में से है। जो लोग अल्लाह की हम्द व सना (प्रशंसा) बयान करते हैं क्यामत के दिन उच्च स्थान पर विराजमान होंगे और अल्लाह महान पूज्य की निकटता के पात्र होंगे। ऐ अल्लाह हमें उन ही में से बना दे।

चूंकि हम हर वक़्त अल्लाह की दया करूणा के मोहताज हैं इस लिये हमें हर घड़ी उसकी हम्द व सना करनी चाहिए। अगर कोई शख्स आप का हाल चाल मालूम करे तो अलहम्दुलिल्लाह कहें। आप कामयाब हों या नाकाम, स्वस्थ हों या बीमार, सवाल कारोबार के बारे में हो या घरेलू हालात के बारे में, अच्छी हालत हो या दयनीय हालत हो, दुख में हों या सुख में, हर वक़्त और हर हाल में ''अल्हम्दुलिल्लाह'' अल्लाह की प्रशंसा करते रहें यह एक छोटा सा वाक्य सूत्र है लेकिन इसकी बड़ी फज़ीलत है।

१. यह अमल के मीज़ान (तराजू) को भर देगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पवित्रता आधा ईमान है। ''अल्हम्दुलिल्लाह'' तराजू को (पुण्य) से भर देगा और ''सुब्हानल्लाह व अल्हम्दुलिल्लाह'' दोनों कलिमात (वाक्य सूत्र) जमीन व आस्मान के बीच खला को पुण्य से भर देते हैं। (सहीह मुस्लिम २२३)

२. ''अलहम्दुलिल्लाह'' कहने वाले से अल्लाह खुश होता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''अल्लाह उस बन्दे से खुश होता है जो एक लुक़्मा खाता है तो अल्हम्दुलिल्लाह कहता है एक घूंट पीता हो तो अल्हम्दुलिल्लाह कहता है। (अर्थात हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है) (सहीह मुस्लिम २७३४)

३. अल्हम्दुलिल्लाह कहने वाले जन्नत में सब से पहले बुलाए जाएंगे ''जो लोग खुशी व गम में अल्लाह की हम्द व सना करने वाले हैं वह सब से पहले जन्नत के लिये पुकारे जाएंगे'' (तबरानी, अल मोजमुल कबीर)

४. यह मुसीबत से बचने में मददगार साबित होता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

शेष पृष्ठ 20 पर

अहम एलान

19 वां आल इंडिया मुसाबक़ा हिफ्ज़ व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम स्थगित

जमईआत, मदारिस के सम्माननीय पदधारियों और प्रिय क्षात्रों को सूचित किया जाता है कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा १९वां आल इंडिया मुसाबक़ा हिफ्ज़ व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम जिस के ५-६ फरवरी २०२२ को अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में आयोजित होने का एलान जरीदा तर्जुमान, नेश्नल अखबारात और अन्या मीडिया माध्यमों से किया गया था, इसे देश में कोरोना और ओमीक्रोन की चिंताजनक स्थिति और सरकारों के निर्देशों के दृष्टि गत दूसरा एलान होने तक अफसोस के साथ विलंबित किया जाता है। कृप्या इसे नोट करलें और अपने परिचितों में भी इस का एलान फरमा दें इस संबन्ध में मर्कज़ी जमीअत की प्रस्तावित मीटिंग भी नहीं हो सकेगी। जिन जमईआत और मदारिस के प्रतिनिधियों ने मुसाबका में शिर्कत के लिये संकल्प कर लिया था और टिकट बनवा लिया था और मर्कज को इसकी सूचना भी दे दी थी उनसे माज़िरत करते हुए इस यक़ीन का इज़हार करते हैं कि अगर्चे हम इस भले काम से फिलहाल वंचित हो रहे हैं लेकिन इन्शाअल्लाह इसके पुण्य से वंचित नहीं होंगे। हालात दुरूस्त और सुगम होते ही मुसाबका की नई तारीख का एलान कर दिया जाएगा।

इस अवसर पर आप तमाम हज़रात से यह भी अपील करना ज़रूरी समझते हैं कि इस महामारी पर नियंत्रण पाने और इससे बचाव के लिये तमाम सरकारी व मेडिकल निर्देशों मिसाल के तौर पर मास्क लगाना, सामाजिक दूरी का लिहाज़ रखना, सफाई सुथराई का ख्याल रखना, सभाओं और भीड़ भाड़ की जगहों से बचना, घर से ज़रूरत पड़ने पर ही निकलना आदि निर्देशों का पालन करें। और इस कठिन स्थिति को भी लाभकारी बनाते हुए शादी समारोह को सादगी के साथ अंजाम दें। गरीबों और मकातिब व मदर्सों की मदद करें जिन बातों की शरीअत में बड़ी ताकीद आई है और जिन की तरफ जमईआत और सरकारों ने बार बार मार्गदर्शन किया हे। इन सावधानियों के साथ अल्लाह से अपने गुनाहों से तौबा व इस्तेग़फार करें और दुआ करें कि अल्लाह तआला देश, समुदाय और मानवता को इस महामारी से शीघ्रतः छुटकारा दे और हम सब की हिफाज़त फरमाये अल्लाह आप सबका हामी और मददगार हो, आमीन

जारी कर्ता

मुसाबका हिफ्ज़ व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम कमेटी,

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

जन्नत

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

'जन्नत' कुरआन का एक विशेष शब्द है जिसको हिन्दी और संस्कृत भाषा में स्वर्ग कहते हैं। किन्तु 'जन्नत' के अर्थ का दूसरी भाषाओं में अनुवाद करने से उसका सम्पूर्ण ज्ञान नहीं हो सकता। क्योंकि जन्नत या स्वर्ग की विचारधारा ध ार्मिक ग्रन्थों में भी पाई जाती है, परन्तु जिस प्रकार कुरआन और सहीह हदीसों में इसके विषय में आया है वह किसी और ग्रन्थ में नहीं है।

इसलिए यहां संक्षेप में कुरआन तथा सहीह हदीसों के प्रकाश में कुछ विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारा वास्तविक ठिकाना तो जन्नत ही है, क्योंकि सारे इन्सानों के बाप आदम तथा उनकी पत्नी हव्वा को वहीं से निकाला गया था। शैतान हमारे पीछे पड़ा रहता है, ताकि हमें जन्नत से वंचित कर दे, जैसे आदम अलैहिस्सलाम और उनकी पत्नी को जन्नत से निकलवा दिया।

''और हमने कहाः ऐ आदम् अलैहिस्सलाम तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों 'जन्नत' में निवास करो, और जहां जी चाहे घूमो फिरो, और जो जी चाहे खाओ-पियो, परन्तु इस वृक्ष के निकट न जाना, नहीं तो तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।'' (कुरआन, सूरा-२, अल-बकरा, आयत-३५)

लेकिन हुआ यह कि शैतान ने आदम अलैहिस्सलाम को बहकाकर जन्नत से निकलवा दिया।

आदम अलैहिस्सलाम की इस घटना से यही पता चलता है कि हमारा वास्तवकि ठिकाना तो जन्नत ही है। जो सांसारिक जीवन में तो प्राप्त नहीं हो सकता, इसलिए मृत्यु के पश्चात ही जन्नत मिल सकती है क्योंकि सांसारिक जीवन की व्यवस्था कुछ इस प्रकार की है कि सारे भले कर्मों का फल इस संसार में नहीं मिलता। इसी प्रकार सारे बुरे कर्मों का दण्ड भी इस संसार में नहीं मिलता। इसलिए इस जीवन के पश्चात एक और जीवन होना चाहिए जहां सत्य और असत्य का निर्णय किया जा सके और सत्यकर्मियों को जन्नत में तथा अत्याचारियों तथा दुष्कर्मियों को जहन्नम में डाला जा सके। अगर ऐसा नहीं हुआ तो ईश्वर की बनाई हुई इस सृष्टि में घोर अत्याचार एवं अन्याय होगा। इसलिए जन्नत और जहन्नम का अवश्यंभावी होना हमारी प्रकृति के अनुसार है।

कुरआन ही अल्लाह की वह अन्तिम पुस्तक है जिसमें 'जन्नत' का विस्तारपूर्वक वर्णन आया है। यहां संक्षेप में जन्नत के विषय में वर्णन किया जाता है।

जन्नत के नामः

कुरआन में जन्नत के लिए विभिन्न नाम आए हैं और हर नाम की अपनी एक विशेषता है। जैसे 'जन्नतुन्नईम' अर्थात वह जन्नत जो हर प्रकार की नेमतों से भरी हो। 'जन्नतुलखुल्द' अर्थात वह जन्नत जो सदा रहने के लिए हो और जिसमें जाने वाला सदैव रहे। इसी प्रकार 'जन्नते-अदन' है जिसका अर्थ भी सदा रहने वाली है। 'दारूस्सलाम' जिसमें रहने वाले को सदैव शान्ति और सलामती प्राप्त

हो। इत्यादि

जन्नत की श्रेणियांः

जन्नत की लगभग एक सौ श्रेणियां हैं। उनमें सबसे उच्च श्रेणी को 'जन्नतुल-फिरदौस' कहते हैं। सहीह हदीस में आता है कि अगर तुम अल्लाह से जन्नत मांगो तो 'जन्नतुल-फिरदौस' मांगो। क्योंकि वह जन्नत की सबसे उच्च श्रेणी है। उसके ऊपर अल्लाह का अर्श है। (सहीह बुखारी,२७६०)

'जन्नतुल-फिरदौस' में जाने वालों का वर्णनः

यूं तो जन्नत में जाने के लिए अल्लाह पर विश्वास, उसके अन्तिम नबी पर विश्वास तथा उनके लाए हुए मार्ग-दर्शन पर विश्वास करना अनिवार्य है जैसा कि कुरआन में कहा गया है।

''निस्सन्देह जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनका ठिकाना जन्नतुल-फिरदौस' है''। (सूरा-अल-कहफ, आयत१०७)

हो सकता है 'फिरदौस' और अंग्रेज़ी का शब्द पेराडाइज़ (Paradise) दोनों का मूल एक ही हो। इन पुण्य कर्मो में छः का वर्णन कुरआन में आया है।

''निश्चय ही ईमानवाले सफल हो गएः १. जो अपनी नमाज़ में (अल्लाह से) डरते रहते हैं। २. और जो व्यर्थ बातों से बचते हैं। ३. और जो ज़कात पाबन्दी से अदा करते हैं। ४. और जो अपने गुत्तांगों की रक्षा करते हैं (अर्थात व्यभिचार से बचते हैं) सिवाय अपनी पत्नियों के और जो उनकी दासियां हैं तो इनसे भोग करना निन्दनीय नहीं है। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त (व्यभिचार) करना चाहेगा तो ऐसे लोग सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखने वाले हैं। ६. और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं, वही वारिस होनेवाले हैं। जो फिरदौस की विरासत पाएंगे। वे उसमें सदैव रहेंगे।'' (सूरा-२३, अल-मोमिनून, आयतें-१-११)

स्वर्गवासियों की कुछ विशेषताएंः

यूं तो स्वर्ग में जाने के लिए अल्लाह, उसके रसूल तथा उसके लाए हुए विधान पर ईमान लाना अनिवार्य है। इस्लाम धर्म आ जाने के बाद अब उसपर पूर्ण ईमान के बिना कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता। जो लोग इस्लाम के बताए हुए मार्ग पर चलेंगे वही जन्नत के पात्र होंगे। कुरआन में ऐसे लोगों के जीवन की विशेषताओं और उनके कर्मों का उल्लेख विभिन्न स्थानों पर किया गया है। उनमें से कुछ का वर्णन यहां किया जा रहा है।

कुरआन की एक सूरा में स्वर्गवासियों के छः पुण्य कर्म बताए गए हैं।

''और अगर कोई अश्लील कार्य कर बैठे, या अपने ऊपर कोई अत्याचार कर बैठे, तो अल्लाह को स्मरण करने लगते हैं और उससे अपने गुनाहों की क्षमा मांगने लगते हैं। और कौन है अल्लाह के सिवा जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जान बूझ कर अपने (दुष्कर्मों) पर अड़े नहीं रहते। यही लोग हैं जिनको रब की ओर से क्षमा करने के साथ ऐसी जन्नतों का बदला मिलेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छा प्रतिदान है (अच्छे) काम करने वालों का (सूरे-३, आले-इमरान, आयतें -१३५ -१३६)

जन्नत की सबसे बड़ी नेमतः

जन्नत की सबसे बड़ी नेमत

अल्लाह का दर्शन है जो संसार में रहते हुए असम्भव है। यहां तक कि नबी मेराज की रात सिदरतुल मुन्तहा तक पहुंच गए जिसके आगे कोई और नहीं जा सकता था। फिरभी अल्लाह का दर्शन नहीं कर सके। नबी मूसा ने भी अल्लाह के दर्शन की इच्छा की और कहा :

''मेरे रब! मुझे देखने की शक्ति प्रदान कर कि मैं तुझे देखूं!'' उसने कहा, ''तू मुझे नहीं देख सकता। हां, पर्वत की ओर देख, यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा तो तू मुझे देख सकेगा। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली की तो उसको चकनाचूर कर दिया, और मूसा मूर्छित होकर गिर पड़ा। जब होश में आया तो कहने लगा, महिमा है तेरी! मैं तेरे हुजूर तौबा करता हूं। और मैं सबसे पहले ईमान लाने वालों में हूं। (सूरा-७, अल-आराफ, आयत-१४३)

इससे सिद्ध हुआ कि इस संसार में अल्लाह का दर्शन असम्भव है। परन्तु जन्नत की महान नेमतों में से एक नेमत अल्लाह का दर्शन है। जैसा कि एक सहीह हदीस में आया हैः

''तुम लोग अल्लाह को इसी प्रकार देखोगे जैसे चांद देखते हो। और कोई वस्तु बीच में रूकावट नहीं बनेगी'' (सहीह बुखारी, ७३३४ तथा सहीह मुस्लिम ६३३)

स्वर्गवासियों की नेमतों में से एक नेमत यह भी होगी कि अल्लाह सदैव के लिए उनसे प्रसन्न हो जाएगा। जैसा कि एक सहीह हदीस में आया है कि स्वर्गवासियों से अल्लाह पूछेगा क्या तुम लोग स्वर्ग में प्रसन्न हो? वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम क्यों प्रसन्न न हों जबकि तूने हमें सब कुछ दे दिया। वह कहेगा कि क्या इससे भी उत्तम चीज़ तुम्हें दूं। वे कहेंगे कि भला इससे भी उत्तम कोई और चीज़ हो सकती है? वह कहेगा कि हां है, और वह है मेरी प्रसन्नता, मैं तुम पर कभी भी क्रोधित नहीं हूंगा।'' (दे. सहीह मुस्लिम, २८२६)

सूरा अत-तौबा में हैः

''अल्लाह ने मोमिन पुरूषों तथा मोमिन स्त्रियों से ऐसी जन्नतों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे, और ऐसे घरों का वादा किया है जो सदैव रहने वाली जन्नत में पाक-साफ होंगे, और सबसे बढ़कर अल्लाह की प्रसन्नता (उनको प्राप्त) होगी, और यही सबसे बड़ी सफलता है।'' (कुरआन, सूरा-९, अत-तौबा, आयत-७२)

इस्लाम की महान शिक्षाओं में पुरूष तथा स्त्री दोनों समान हैं। जन्नत में प्रवेश का दोनों को अधिकार है। ईमान वालों के लिए अल्लाह ने फिरऔन की पत्नी का उदाहरण दिया है।

''और अल्लाह ने ईमान वालों के लिए फिरऔन की पत्नी की मिसाल दी है। जब उसने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास 'जन्नत' में एक घर बना दे, और मुझे फिरऔन और उसके कर्म से छुटकारा दे, और छुटकारा दे अत्याचारियों से'' (सूरा-६६, अत-तहरीम, आयत-११)

इसमें ईमान वाली स्त्रियों के लिए खुला संदेश यह है कि अपने नेक कामों के द्वारा वे भी जन्नत की हक़दार बन सकती हैं।

जन्नत की नेमतों को हम इस संसार में अनुभव नहीं कर सकते जैसा कि एक सहीह हदीस में आया है।

''अल्लाह ने अपने सदाचारी

बन्दों के लिए (जन्नत में) ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिनको किसी नेत्र ने देखा नहीं, किसी कान से सुना नहीं, और न किसी के विचार में वे चीज़ें आ सकती हैं। वास्तविकता तो यही है कि अल्लाह ने किसी को उससे सूचित किया ही नहीं'' (दे, बुखारी ३२४४, तथा मुस्लिम २८२३)

इसी बात को कुरआन में एक स्थान पर इस प्रकार बयान किया गया है।

''कोई जीव नहीं जानता कि आंखों की जो ठंडक उसके लिए छिपाकर रखी गई है वह उनके कर्मों का बदला है जो वे करते थे'' (सूरे-३२ अस-सजदा, आयत-१७)

जन्नत की ओर से जाने वाला कर्मः

सत्यता अच्छाई की ओर ले जाती है और अच्छाई जन्नत की ओर खींचती है। एक व्यक्ति जब सच्चाई ग्रहण करता है तो उसको सच्चा लिख दिया जाता है। और झूठ बुराई की ओर ले जाता है और बुराई जहन्नम की ओर ले जाती है एक व्यक्ति झूठ बोलता रहता है यहां तक कि उसको झूठ लिख दिया जाता है। (दे. बुखारी ६०६४ तथा मुस्लिम २६०७)

एक हदीस में आया है

''तुम जन्नत में उस समय तक प्रवेश नहीं कर सकते जब तक कि ईमान न लाओ। और तुम्हारा ईमान उस समय तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक आपस में प्रेम न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बता दूं कि अगर तुम उस पर अमल करो तो तुम में आपस में प्रेम हो जाए? वह हैः आपस में सलाम को फैलाना।'' (सहीह मुस्लिम,५४)

एक दूसरी हदीस में आता है कि अब्दुल्लाह बिन सलाम मदीना के एक यहूदी थे। जब नबी स० मदीना पधारे तो वे भी आप को देखने के लिए निकल पड़े। जब आप का दमकता हुआ चांद जैसा चेहरा देखा तो पुकार उठे कि यह किसी झूठे नबी का चेहरा नहीं हो सकता। अब्दुल्लाह बिन सलाम कहते हैं कि सबसे पहली बात जो नबी स० से मैंने सुनी, वह यह थी।

''ऐ लोगो! आपस में सलाम को फैलाओ, एक-दूसरे को भोजन कराओ, जब लोग रात्रि में सोते हैं तो उस समय उठकर नमाज़ पढ़ो, और फिर जन्नत में शान्ति के साथ प्रवेश कर जाओ'' (तिर्मिज़ी २४८५ तथा इब्ने माजा १३३४)

कन्याओं के साथ उत्तम व्यवहार जहन्नम से सुरक्षित रखने का साधन है। (बुखारी १४१८ तथा मुस्लिम २६२९)

''वह व्यक्ति कितना निन्दनीय है जिसने अपने माता-पिता को बुढ़ापे में पाया और स्वर्ग में प्रवेश न कर सका''। (सहीह मुस्लिम २५५१)

अर्थात उनकी सेवा नहीं की, जिसका प्रतिदान स्वर्ग है।

जन्नत के वासीः

जन्नत के वासियों में अधिकतर वे लोग होंगे जो संसार में निर्धन और असहाय थे, और जहन्नम के वासियों में अधिकतर वे होंगे जो संसार में घमन्डी और अपने को श्रेष्ठ समझते थे। (सहीह मुस्लिम, २८५३)

''जन्नत में प्रेवेश करने वाला पहला गरोह चौदहवीं के चांद सदृश होगा। उसके बाद वाला गरोह सितारों के सदृश चमकता हुआ होगा। वहां प्रत्येक पुरूष के लिए दो पत्नियां होंगी। जन्नत में कोई बिन ब्याहा नहीं होगा।'' (दे, सहीह मुस्लिम २८३४)

जो जन्नत में प्रवेश कर गया वह वहां सदैव रहेगा। न तो उसके कपड़े पुराने होंगे, और न ही उसकी जवानी जाएगी।'' (सहीह मुस्लिम २८३६)

एक दूसरी हदीस में आया है।

जन्नत के वासी कभी बीमार नहीं पड़ेंगे। उसमें सदैव रहेंगे, कभी मृत्यु नहीं आएगी। हर समय युवक रहेंगे, कभी बूढ़े नहीं होंगे। (दे. सहीह मुस्लिम २८३७)

जन्नत की कुछ विशेषताएं

जन्नत का विस्तार आकाशों और धरती जैसा है।

''अपने रब की क्षमा की ओर लपको, और जन्नत की ओर भी जिसका विस्तार आकाशों और ध रती के समान है,यह अल्लाह से डरने वालों के लिए तैयार की गई है।'' (कुरआन, सूरा-३, आले-इमरान-१३३)

एक हदीस में जन्नत का विस्तार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार बताया है।

''जन्नत का एक वृक्ष इतना विशाल होगा कि एक व्यक्ति उसके साए में एक सौ वर्ष तक चलता रहेगा परन्तु उसके अन्त तक नहीं पहुंच पाएगा।'' (दे. बुखारी ४८८१ तथा मुस्लिम २८२६)

एक दूसरी हदीस में यह भी आया है कि

''अगर वह चलने वाला तेज़ रफतार घोड़े पर भागे तब भी उसके अन्त तक नहीं पहुंच सकता।'' (दे. बुखारी ६५५३, मुस्लिम २८२८)

जन्नत के द्वारः

कुरआन में तीन स्थानों पर जन्नत के द्वारों का वर्णन आया है।

प्रथमः सूरा रअद में जहां ईमान वालों की विशेषताएं बताई गई हैं जैसे धैर्य ग्रहण करना, नमाज़ अदा करना, भलाई के द्वारा बुराई को दूर करना इत्यादि। इनका फल यह बताया गाय है।

''इनके लिए सदैव रहने वाली जन्नतें हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे। इसी प्रकार उनके पूर्वजों में से, औरउनकी पत्नियों में से, और उनकी सन्तानों में से जो सदाचारी होंगे, और फरिश्ते हर द्वार से उनके पास आएंगे। (वे कहेंगे) तुम पर सलाम हो, यह तुम्हारे धैर्य का बदला है। तो कितना अच्छा घर है बदले का।'' (सूरा-१३, अर-रअ्द, आयतें-२३-२४)

द्वितीयः सूरा सॉद में यह बताया गया है कि सदाचारियों के लिए जन्नत के द्वार खुले रहेंगे।

यह एक उपदेश है, और निश्चय ही सदाचारियों के लिए अच्छा ठिकाना है, वह है सदैव रहने वाली जन्नत जिनके द्वार उनके लिए खुले रहेंगे। (सूरा-३८, साद, आयतें-४६,५०)

तृतीयः सूरा जुमर में दो गरोहों का वर्णन हो रहा है। जहन्नम में जाने वाले तथा जन्नत में जाने वाले, इस दूसरे गरोह के विषय में आया है।

''जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनको गरोह बनाकर जन्नत की ओर खींचकर लाया जाएगा यहां तक कि जब वे उसके पास पहुंच जाएंगे, और उसके द्वारा खोल दिए जाएंगे, तो उसके प्रबंधक कहेंगे, तुम पर सलामती हो, तुम बहुत अच्छे रहे, इसमें सदैव के लिए प्रवेश कर जाओ। सूरा-३६ जुमर, आयत-७३

हमें अल्लाह से दुआ करनी चाहिए कि हमें भी अपनी कृपा से जन्नत प्रदान करे। **(''कुरआन की इन्साइक्लोपीडिया'' से)**

व्यर्थ सवाल से बचना चाहिए

मौलाना अंसार जुबैर मुहम्मदी

बिला ज़रूरत किसी की निजी ज़िन्दगी के बारे में सवाल करना हसद करने वालों का स्वभाव रहा है।

अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत में हमारी तमाम समस्याओं का समाधान मौजूद है।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है कि मैंने जिन चीज़ों से रोक दिया है उनसे बचो और जिन बातों का हुक्म दिया है उसे जहां तक सामर्थ हो अमल करो, अकारण सवालात में न पड़ो, इसलिये कि तुम से पहली उम्मतों के लोग ज़्यादा सवाल करने और नबियों की कार्य शैली का विरोध करने की वजह से हलाक हो गये।

इस हदीस की शाने नुजूल (अवतरणकाल और कारण) के बारे में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक खुतबा दिया और फरमायाः लोगो! तुम पर हज फर्ज़ किया गया है इसलिए तुम हज करो, एक आदमी ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हर साल या इसी साल? यह सुन कर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खामूश रहे, उसने तीन बार अपनी यही बात दोहराई, तो आपने फरमायाः अगर मैं हां कह देता तो तुम पर हर साल हज वाजिब हो जाता और फिर तुम इसका सामर्थ नहीं रखते। फिर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैंने तुम्हें जिन चीज़ों पर छोड़ा है उन्हीं पर बाक़ी रहो, इसलिये कि तुम से पहले उम्मतें ज़्यादा सवाल करने और अपने नबियों पर मतभेद करने की वजह से हलाक कर दी गईं। इसलिये जब मैं तुम्हें किसी बात का हुक्म दूं तो यथाशक्ति इसका पालन करो और जब किसी चीज़ से रोक दूं तो तुम इसे छोड़ दो। (सहीह मुस्लिम-१३३७)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुतबा दिया, जब खुतबा दे चुके तो एक शख्स ने सवाल किया ऐ अल्लाह के पैगम्बर! मेरा बाप कौन है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तेरा बाप अमुक व्यक्ति है। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित (नाज़िल) की ''ऐसी बातों के बारे में सवाल न किया करो कि अगर वह तुम पर जाहिर हो जाएं तो तुम्हें नागवार हो''। (सूरे माइदा-१०१, सहीह बुखारी, ससंदर्भ फतहुल बारी ८/२८०, सहीह मुस्लिम २३५६)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें ज़्यादा सवाल करने से इस लिये मना फरमाया है कि फालतू और ज़्यादा सवाल इन्सान की हिलाकत का सबब है। हलाल और हराम के बारे में खास तौर से ज़्यादा सवाल करने से मना किया गया है जैसा कि सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से बयान है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमानों में सबसे बड़े अपराधी (पापी) वह हैं जो कोई सवाल करें और उनके सवाल करने की वजह से हराम न होने वाली चीज़ हराम हो जाए। (सहीह बुखारी ससंदर्भ फतहुल बारी १३/२६३, सहीह मुस्लिम २३८५)

इसी लिये सहाबा किराम

रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम सवाल करने में अत्यंत सावधानी से काम लिया करते थे। जैसा कि अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि हमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल करने से रोक दिया गया था इस लिये हम उस वक़्त बहुत खुश होते थे जब कोई अकलमन्द दिहाती नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर सवाल करता था जब वह कुछ पूछता तो हम सुना करते थे (सहीह मुस्लिम-११२)

सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कभी कभी उन चीज़ों के बारे में पूछा करते थे जो घटित नहीं हुए लेकिन इस से उनका मक़सद यह होता कि हम आने वाले फितनों (परीक्षाओं, आज़माइशों) से निपटने के लिये तैयार रहें और मुक्ति की उचित राह निकालें।

हदीसों में फालतू बात चीत और ज़्यादा सवाल करने से हमेशा के लिये मना किया गया है और शरीअत के बारे में जानकारी हासिल करने, दीन के आदेशों को समझने और अमल के जजबे से सवाल करने को अच्छा माना गया है। कटहुज्जती और अकारण बहस से मना किया गया है। हमें तो अपनी तारीख की चिंता करनी चाहिए और फालतू सवाल से बचना चाहिये।

एक शख्स ने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से हजरे असवद (काले पत्थर) चूमने के बारे में पूछा। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने जवाब दिया। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसका चुंबन (बोसा) लेते हुए देखा है। उसने फिर पूछा कि अगर भीड़ में पीछे रह जाऊं? तो इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने उससे कहाः तुम अपने अगर मगर को एक तरफ रखो मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस का इस्तेमाल और बोसा लेते हुए देखा है। (सहीह बुखारी ससंदर्भ फतहुल बारी ३/४७५)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा का मक़सद यह था कि तुम्हारा मक़सद केवल नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण होना चाहिए मतभेद और भीड़ में पक्ष बनना नहीं।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फरमाया करते थे कि जो घटना घटित न हुई हो उसके बारे में सवाल न करे। मैंने अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप फर्जी (गढ़े) हुए सवाल करने वाले पर लानत किया करते थे।

जैद बिन साबित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से जब कोई गढ़ा हुआ मसला पूछता तो पहले इससे पूछते कि क्या यह घटित हुई है? अगर सवाल करने वाला घटित न होने की बात कहता तो आप फरमाते इसे छोड़ दो जब ऐसा घटित होगा फिर पूछना।

मसरूक रह० कहते हैं कि मैंने उबै बिन काब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से किसी चीज़ के बारे में पूछा? आप ने कहा कि क्या ऐसा हुआ है? मैंने कहा नहीं तो आपने फरमायाः इसके घटित होने तक हमें राहत दो, जब ऐसी स्थिति घटित हो जाएगी तो फिर हम सवाल का जवाब देने का प्रयास करेंगे।

अफसोस कि बाज़ लोगों ने तो वह मसाइल भी बयान किये हैं जिन की क़्यामत तक ज़रूरत नहीं पड़ेगी

सिर्फ फर्ज़ी और ख्याली मसाइल हैं। इस सिलसिले में हमारा तरीक़ा यह होना चाहिए कि जो कुछ कुरआन और हदीस में है उसे बिना संकोच के स्वीकार कर लें और जो नये मसाइल वक़्त के लिहाज़ से उत्पन्न हों तो ऐसी स्थिति में मिल्लत के सहीह मार्ग दर्शन के लिये ओलमा इसके बारे में अपना फतवा दें।

इमाम अहमद बिन हंबल रहमातुल्लाही अलैहि से जब कोई ख्याली सवाल किया जाता तो उसका जवाब नहीं देते थे इसलिये कि इसमें वक़्त की बर्बादी है इन्सान पहले अपने ऊपर फर्ज पांच वक़्त की नमाज़, ज़कात और रोज़ा को लागू करे। मुत्तकी और अल्लाह से डरने वाला यूं भी फालतू सवालात और अकारण टिप्पणी से दूर रहेगा।

इसी लिये उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमातुल्लाहि अलैहि फरमाते थे कि तक़्वा यह नहीं है कि केवल रात में इबादत और दिन में रोज़ा रखा जाए बल्कि तक़्वा यह है कि अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को छोड़ दिया जाये और इसके साथ इन्सान के पास नेक अमल भी है तो यह सबसे बड़ी भलाई है।

मगर अफसोस कि आप बहुत से लोगों को देखें गे जो मुस्तहब और नफली कामों में तो खूब बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे, नफली इबादतों के बारे में खूब सवालात करेंगे लेकिन वह अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों की ज़र्रा बराबर परवाह नहीं करते।

हदीसों में स्पष्ट कर दिया गया है कि जितनी ताक़त हो, अल्लाह से डरो अगर कोई अल्लाह के हुक्म का पालन करने में असमर्थ है तो अल्लाह तआला दयालू और कृपालू है।

इमरान बिन हुसैइन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो, अगर इस की ताक़त नहीं है तो बैठ कर नमाज़ पढ़ो अगर इसकी भी ताक़त नहीं तो लेट कर नमाज़ पढ़ो। (सहीह बुखारी संदर्भ फतहुल बारी २/५८७)

ओलमा से किये गये सवालात के जवाबात से हमें फायदा उठाना चाहिए और हक की पैरवी करनी चाहिए।

सारांश

१. हलाल और हराम को अल्लाह ने तय और निर्धारित किया है।

२. इन्सान शरई कर्मों का पालन करने का प्रयास करे।

३. अगर किसी को सभी वाजिबात को अदा करने का सामर्थ नहीं है तो यथासामर्थ ही अदा करेगा।

४. अल्लाह की रहमत बड़ी व्यापक है।

५. अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर बड़ी आसानी की है।

६. जब कोई बात नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित हो जाए तो इसके बारे में सवाल नहीं करना चाहिए बल्कि इसे बिना संकोच के कुबूल कर लेना चाहिए।

७. पिछली शरीआतें की पैरवी से डराया गया है।

८. पिछली उम्मतें ज़्यादा सवाल करने की वजह से हलाक हुईं इसलिये मुसलमानों पर अनीवार्य है कि अपने अंबिया (पैगम्बरों) पर मतभेद न करें और फालतू सवालात से बचें।

९. फालतू सवाल करना हराम है।

१०. मतभेद और फितने का दरवाज़ा खोलने वाले सवालात करना मना है। ११. इन्सान अल्लाह के आदेशों और शरई नियमों से हर हाल में राज़ी रहे।

खुशगवर घरेलू जीवन के नियम

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

हर इन्सान की यह आरजू और आशा होती है कि उसका दामपत्य जीवन बेहतर से बेहतर गुज़रे और उसमें सुख और संतुष्टि हो। इस्लाम धर्म ने परिवार के मजबूत आधार के लिए कुछ नियम और सिद्धांत तय किए हैं और हर स्तर पर मार्गदर्शन किया है। परिवार के अन्दर आपसी सहयोग का वातावरण, एक दूसरे के सम्मान का माहौल और परिवार के हर व्यक्ति के अधिकारों की मांग से पहले अदायगी ऐसे इस्लामी सिद्धांत और नियम हैं कि इनका पालन करने के बाद परिवार के लोग किसी भी तरह के बिखराव से सुरक्षित हो जाते हैं।

इसलिये सभी के लिये ज़रूरी है कि दामपत्य जीवन के नियमों और सिद्धांतों पर स्थापित रहें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी हर मुसलमान के लिये आदर्श है इसलिये आप के परिवारिक जीवन की रोशनी में अपने जीवन को सुगम बनाने की कोशिश करनी चाहिएं।

जब हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में क्या किया करते थे? तो उन्होनें जवाब दियाः आप अपने घर वालों के काम काज यानी उनकी सेवा में लगे रहते थे, जब नमाज़ पढ़ने का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिये चले जाते थे। (बुखारी)

इब्ने रजब रहमातुल्लाह अलैहि फरमाते हैंः

''हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने एक अन्य रिवायत में सेवा की व्याख्या करते हुए फरमायाः तुम लोगों की तरह ही अपने घर वालों के काम में लगे रहते थे। अपने जूतों की मरम्मत कर लेते, कपड़े में चक्ती (पेवन्द) लगा लेते और सामान को व्यवस्थित ढंग से रख दे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हा कहती हैं कि मैंने आइशा रज़ियल्लहो तआला अन्हा से पूछाः अल्लाह के रसूल घर में क्या करते थे? तो उन्होंने फरमायाः आप एक इन्सान थे, अपने काम करते, बकरी का दूध दुह लेते, अपना कपड़ा सी लेते और अपना जूता सी लेते। इस अर्थ की और भी रिवायतें हैं जिन से पता चलता है कि आप घर के कामों में हाथ बटाते थे। आप के अन्दर तमाम इन्सानी कमालात मौजूद थे इसलिये ऐसी शख्सीयत को हमें अपना आदर्श बनाना चाहिए।

पति पत्नी का एक दूसरे का सम्मान करना और खूबियों की तारीफ करना सुगम और खुश्गवार जीवन का महत्वपूर्ण तरीक़ा है इस से नकारात्मक विचार खतम होते हैं। पति-पत्नी दोनों की यह कोशिश होनी चाहिए कि एक दूसरे के मान सम्मान और प्रतिष्ठा का खास ख्याल रखें, एक दूसरे की मेहनत की प्रशंसा करें क्योंकि प्रशंसा और सराहना करने से प्रोत्साहन होता है जबकि अकारण कमियां निकालने से बिल्कुल विपरीत

असर पड़ेगा, इससे मनोबल टूटेगा और दोनों पक्षों के संबन्धों में खलीज पैदा होने लगेगी।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों की इज्ज़त और उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे जिस का उल्लेख बहुत सी हदीसों में मौजूद है हमें भी आप के आदर्श को अपना कर यही व्यवहार करना चाहिए। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा की सराहना करते हुए फरमायाः मर्दों में तो बहुत कामिल इन्सान गुज़रे हैं लेकिन औरतों में मरयम बिन्ते इमरान और फिरऔन की बीवी आासिया के अलावा कोई कामिल औरत नहीं गुज़री निसन्देह आइशा की फज़ीलत (श्रेष्ठता) अन्य औरतों पर ऐसे ही है जैसे तमाम पकवानों पर सरीद की वरीयता (सहीह बुखारी सहीह मुस्लिम) (सरीद एक प्रकार का पकवान है जिसे पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत पसन्द करते थे)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि उम्मुल मोमिनीन हफसा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने उनको यहूदी की बेटी कह दिया है तो वह रोने लगीं। इसी बीच आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां पहुँच गये। रोने का कारण पूछा तो बताया कि हफसा ने मुझे यहूदी की बेटी कहा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम नबी की बेटी हो और तुम्हारे चचा भी नबी थे और तुम एक नबी की बीवी भी हो उसका तुम पर गर्व करना क्या अर्थ रखता है। (सुनन तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह अन्दाज़ केवल खुश करने के लिये नहीं था बल्कि इसका मकसद प्रोत्साहन था इसी तरह आप अपनी बीवियों के काम की भी प्रशंसा करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उम्मुल मोमिनीन हज़रत जैनब रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के बारे में फरमाते हैंः

''मुझ से सब से पहले उसकी मुलाक़ात होगी। जिसके हाथ लंबे हैं।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि पवित्र बीवियां एक दूसरे के हाथों को नाप कर देखती थीं कि किस का हाथ लंबा है? तो हम में से जैनब का हाथ सबसे लम्बा था क्योंकि वह अपने हाथ से काम करती (कमाती) थीं और सदक़ा करती थीं। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

दूसरे पक्ष की कामियों और कोताहियों को नज़रअन्दाज़ करना चाहिए क्योंकि कोई भी इन्सान हर पहलू से मुकम्मल नहीं होता। जैसा कि इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाही अलैहि ने फरमायाः

''नज़र अन्दाज़ करने में ६० प्रतिशत सुख और राहत है'' बाज़ का कहना है कि ''शरीफ लोग कभी ज़्यादा बारीकी में नहीं जाते।'' यह कहावत भी है कि ''ज़्यादा डांट डपट करोगे तो प्यारे भी बेगाने हो जायेंगे।''

बीवी के साथ सदव्यवहार किया जाए उसके अधिकारों का हनन न किया जाए बीवी के साथ अच्छा व्यवहार करने में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श हमेशा दृष्टिगत रहे। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और औरतों के भी वैसे ही हक़ हैं जैसे इन पर मर्दों के हैं, अच्छाई के साथ, हां मर्दों को औरतों पर फज़ीलत है'' (सूरे बक़रा-२२७)

औरत को भी चाहिए कि वह भी किसी बात पर हठ न करे और

न शिकवा शिकायत करे और न ही अपनी सहेलियों और पड़ोसियों के स्तर की तुलना करे बल्कि नर्मी का मामला रखे और अपने घरूलू हालात के एतबार से अपने आप को ढालने की कोशिश करे ताकि पति के साथ उसके संबन्ध सुगम और खुशगवार रहें।

पति-पत्नी को राय मश्वरा में एक दूसरे को शरीक रखना चाहिए। इसका मतलब यह कदापि नहीं कि इससे पति के स्थान और वर्चस्व में कोई कमी आ जाए गी क्योंकि फैसला आदमी ही को करना है। राय मश्वरा लेने से बीवी पर सकारात्मक असर पड़ेगा और बीवी को यह एहसास और आभास होगा कि पति उसके महत्व को पूर्ण रूप से समझता है इससे बीवी के अन्दर प्रोत्साहन का एहसास पैदा होगा।

पति-पत्नी दोनों को एक दूसरे के मां-बाप और अन्य रिश्तेदारों के अधिकारों का ख्याल करना चाहिए और किसी के बारे में अनुचित शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए क्योंकि अनुचित शब्दों के प्रयोग से नफरत पैदा होती है। बहुत से लोग अपनी बीवी के मां बाप के बारे नकारात्मक बात करने लगते हैं जिससे उसको दुख होता है और दामपत्य जीवन में कड़वाहट पैदा हो जाती है। इसलिये शौहर बीवी को एक दूसरे के रिश्ते नाते दारों के बारे में बात चीत के वक्त शिष्टा और सम्मान का पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए और इस्लामी सिद्धान्तों और नियमों का पालन करते हुए एक दूसरे के लिये त्याग और कुर्बानी की भावना रखनी चाहिए यह दामपत्य जीवन के लिये बहुत आवश्यक है।

शेष पृष्ठ 8 का

फरमायाः ''जिस ने किसी मुसीबत ग्रस्त को देख कर यह कहा कि तमाम मारीफें उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे इस मुसीबत से सुरक्षित रखा जिस में तुम को लिप्त कर रखा है और मुझे बहुत सारे लोगों पर फज़ीलत दे रखी है तो अल्लाह उसे इस मुसीबत से सुरक्षित रखेगा'' (तिर्मिज़ी ३४३२)

ज़िक्र व अज़कार के बहुत फज़ाइल और फायदे के दृष्टिगत अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करने का एहतमाम करना चाहिए और सुन्नत के चिरागों से अपनी जात माहौल व समाज को रोशन करने का भरपूर प्रयास करना चाहिए ताकी हमारी आखिरत सँवर जाए जो असल कामयाबी है।

५. जन्नत में ''अलूहम्दो हाउस'' होगा जिस में वह लोग होंगे जो जीवन के दुख सुख में अल्लाह की प्रशंसा करने वाले और तक़दीर के फैसले पर सब्र करने वाले होंगे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जब मोमिन के बच्चे का निधन तो जाता है तो अल्लाह तआला फरिश्तों से पूछता है कि क्या तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह कब्ज़ कर ली है? फरिश्ते कहते हैं हां, अल्लाह तआला फरमाता है कि क्या तुम ने मेरे बन्दे के जिगर का टुकड़ा ले लिया है? फरिश्ते कहते हैं हां, अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे बन्दे ने क्या कहा? फरिश्ते कहते हैं उसने ''अलहम्दुलिल्लाह'' कहा और इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा तो अल्लाह तआला फरमाए गा कि मेरे बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बना दो उसका नाम बैतुल हम्द ''अल्हम्दो हाउस'' रख दो। (तिर्मिज़ी-१०२१)

इस्लाम धर्म के अनुपम उपदेश एवं शिक्षाएं

नौशाद अहमद

इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है अम्न शान्ति और अपने आपको भले कामों के लिये समर्पित करना, और आत्म समर्पण करना।

इस शब्द का दोनो अर्थ सकारात्मकता का पहलू रखता है, और इसी बुनियाद पर इस्लाम का सन्देश दिया जाता है। जब इस्लाम दुनिया में आया उस वक्त सूरते हाल यह थी कि पूरी दुनिया में अम्न व शान्ति का अभाव था, कुंबे कबीले आपस में मामूली मामूली बातों पर टकरा रहे थे जब एक बार लड़ाई शुरू होती थी तो वह लड़ाई वर्षों तक चलती रहती थी, जीवन का कोई विभाग या मैदान ऐसा नहीं था जिसमें इन्सान को और पूरे समाज को सुख का एहसास हो, यतीमों का माल हड़प करना, लड़कियों को जिन्दा दफन करना दूसरे के माल पर कब्ज़ा कर लेना, कमजोर लोगों को सताना, सूद की आड़ में कमजोर लोगों को प्रताड़ित करना, अवैध संबन्ध बनाना आदि यह सब बिल्कुल साधारण समझा जाता था किसी के मन में बुराई को बुराई नहीं समझा जाता था, यही वह मर्ज था जिस की वजह से पूरा समाज अव्यवस्था का शिकार था, समाज का पूरा ताना बाना बिखरा हुआ था, अम्न व शान्ति बिल्कुल भंग हो चुकी थी, लोग सुख के लिये तरस्ते थे, मेल मिलाप से लोग कोसों दूर थे, रिश्ते नाते नाम की कोई चीज़ नहीं थी, एक दूसरे का आदर सम्मान बिल्कुल नहीं था। नाइन्साफी का बोल बाला था, लोग इन्साफ के लिये तरस्ते थे। इन्हीं परिस्थितियों में अरब में हज़रत मुहम्मद को ईशदूत बनाकर भेजा गया जिन्होंने पूरे संसार को मानवता का पाठ पढ़ाया। सबसे पहले हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अरब के वासियों को एक अल्लाह की उपासना की शिक्षा दी, उस समय अरब वासी विभिन्न प्रकार की बुराइयों में लिप्त थे अरब वासियों को बुराइयों से दूर करने के लिये उनको उनके पालनहार से परिचित कराया और सब को एकता, भाई चारा और इन्साफ का पाठ दिया। जीवन को सहीह रास्ते पर रखने और एक इन्सान को जिन चीज़ों की जरूरत हो सकती है, उनसे सबको आगाह किया। नाइन्साफी अरब समाज का एक बड़ा मर्ज था आपने व्यवहारिक रूप से इन्साफ को लागू करके पूरे अरब समाज को इन्साफ के रास्ते पर खड़ा कर दिया। इस्लाम धर्म दुनिया में अम्न व शान्ति स्थापित करने के लिये इन्साफ को आवश्यक करार देता है। उसका कहना है कि कानून के मामले में किसी के साथ रिआयत न की जाये, हर छोटे बड़े के साथ इन्साफ का मामला किया जाये, नोकर, मालिक सबको इन्साफ दिया जाये, समाज के हर वर्ग के अधिकार को दिया जाये। इन्साफ की एक मिसाल यह भी है कि एक बड़े खानदान की औरत ने चोरी कर ली, अब उसको दण्ड देने की बात थी, इस औरत का संबन्ध एक बड़े मालदार वर्ग से था। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के करीबी हज़रत उसामा रजिअल्लाहो तआला अन्हो

इस औरत की सिफारिश के लिये आप की अदालत में गये। हज़रत उसामा रजिअल्लाहो अन्हों की सिफारिश सुनने के बाद हज़रत मुहम्मद स० अ०ने फरमाया तुम से पहले लोग इस वजह से बर्बाद हो गये कि वह कमज़ोर और गरीब को सजा देते थे और बड़े लोगों को छोड़ देते थे। सौगन्ध है उस जाति की जिसके कबजे में मेरी जान है अगर मेरी बेटी फातिमा भी चोरी करती तो मैं निसन्देह उसका भी हाथ काटता। (बुखारी)

इन्साफ का इससे अच्छा पैमाना क्या हो सकता है कि एक सन्देष्टा भी स्पष्ट रूप से यह एलान कर रहा है कि अगर उसकी बेटी भी चोरी का अपराध करेगी तो उसको भी सजा दूंगा।

यह आदेश और उपदेश यह दर्शाता है कि इस्लाम में इन्साफ से कोई समझौता नहीं किया जा सकता है जिसने जो अपराध किया है उसको सजा मिलेगी, क्योंकि नाइन्साफी से समाज का ताना बाना विखरता है और एक मजलूम का अधिकार हनन होता है और इस्लाम किसी का अधिकार हनन बर्दाश्त नहीं करता है।

एक अवसर पर ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसका भाई उसके मातहत में हो तो ऐसे शख्स को चाहिये कि जो स्वंय खाये वही अपने सेवक को भी खिलाये जो स्वंय पहने वही अपने सेवक को भी पहनाये और अपने सेवक से उसकी शक्ति से ज्यादा काम न ले अगर कोई कठिन काम उसके जिम्मे लगाओ तो उसकी मदद करो। (बुखारी)

इस्लाम में एक इन्सान को दूसरे इन्सान पर केवल नेकी और संयम के आधार पर श्रेष्ठता प्राप्त होता है। इस्लाम की शिक्षा है कि किसी गोरे को किसी काले पर किसी काले को किसी गोरे पर और किसी अरब को गैर अरब पर और किसी गैर अरब को किसी अरब पर श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है।

यह इन्साफ और समानता की अनुपम मिसाल है और नस्लवाद और भेद भाव के खिलाफ आवाज़ है। आज नस्ली भेद भाव के आधार पर विभिन्न देशों में लोगों के खिलाफ जो व्यवहार किया जा रहा है वह किसी से ढका छिपा नहीं है, इस्लाम किसी भी प्रकार के भेदभाव का खण्डन करता है और समानता का प्रोत्साहन करता है क्योंकि भेदभाव समाज को अव्यस्था की तरफ लेजाता है इसी लिये इस्लाम भेदभाव से रोकता है और जो भेदभाव करता है उसको हतोत्साहित करता है।

नम्रता और दया समाज की बड़ी आवश्यकता मानी जाती है, दुनिया का कौन सा इन्सान है जो दया नम्रता नहीं चाहता है। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० पूरे संसार के लिये दया आगार बनकर आये और अपनी करनी और कथनी से यह साबित किया कि अगर लोगों के साथ दया करूणा का व्यवहार किया जाये तो इससे समाज के तमाम छोटे बड़े झगड़े सब खत्म हो जायेंगे। दया करूणा के बारे में इसलाम ने जो शिक्षा दी है उनको संक्षिप्त में पेश किया जा रहा है। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया दया करने वालों पर अल्लाह दया करे गा तुम धरती वालों पर दया करो तो आकाश वाला तुम पर दया करेगा। (बुखारी)

❑ ❑ ❑

राष्ट्रीय सद्भावना और गैर मुस्लिमों के अधिकार

अबू अदनान सईदुर्रहमान सनाबिली

राष्ट्रीय सदभावना की बात हो और इस्लाम धर्म में गैर मुस्लिमों को जो अधिकार दिये गये हैं अगर इस हवाले से बात न हो तो यह चर्चा अधूरा माना जायेगा। विशेष रूप से ऐसी परिस्थिति में जबकि पूरी दुनिया में इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों ने यह प्रोपैगण्डा कर रखा हो कि इस्लाम अम्न व शान्ति का धर्म नहीं बल्कि यह अलगाव वादी धर्म है और वह अपने अनुयाइयों में यही रूझान पैदा करता है। यह प्रोपैगण्डा किया जाता है कि वह इस्लाम के अलावा अन्य धर्म के मानने वालों से संबन्ध तोड़ने का आदेश देता है और अपने मानने वालों को उन लोगों से काट देता है जो उससे मतभेद रखते हैं। खेद की बात तो यह है कि किताबों समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के अलावा इन्टरनेट पर तो इस प्रोपैगण्डे की भरमाड़ है जबकि यह तमाम आपत्तियां निराधार हैं। इस्लाम की शिक्षाएं इन आपत्तियों और गलत प्रोपैगण्डों का खण्डन करती हैं इस्लाम धर्म गैर मुस्लिमों से साधारण मानवीय और चारित्रिक संबन्ध रखने से कभी मना नहीं करता है। इन ख्यालात के पीछे असाक्षरता, अज्ञानता के साथ बहुत से इतिहासिक कारण हैं इनमें इस्लाम की खूबियों को स्वीकार न करने की सोच, उसे किसी भी कीमत पर गवारा न करने की भावना और मुसलमानों के साथ पक्षपात शामिल हैं, इस कारण इस्लाम की साफ और स्पष्ट शिक्षाओं को समझने की कोशिश तो नहीं होती अलबत्ता उन्हें तोड़ मरोड़ कर पेश करने और इस्लाम को भयानक शक्ल में पेश करने का उपाय किया जाता है।

यह दुरूस्त है कि इस्लाम अपने अनुयाइयों को इस्लाम की शिक्षाओं को अपनाने का आग्रह (ताकीद) करता है और दूसरों की नक्काली करने से बचने का आदेश देता है लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि वह अन्य समुदाय के साथ दुश्मनी और छलकपट की प्रशन्सा करता है। कुरआन में अल्लाह तआला ने अन्य समुदायों के अधिकार का उल्लेख इन शब्दों में किया है।

''जिन लोगों ने तुम से दीन के मामले में लड़ाई नहीं लड़ी और तुम्हें जिला वतन (निर्वास्ति) नहीं किया उनके साथ सदव्यवहार करने और इन्साफ का व्यवहार करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता, बल्कि अल्लाह तआला तो इन्साफ करने वालों को दोस्त रखता (पसन्द) करता है।'' (सूरे मुम्तहिना-८)

कुरआन की इस आयत ने यह स्पष्ट कर दिया कि मुसलमानों से लड़ाई न करने वालों के साथ मानवीय व्यवहार और चारितत्रिक संबन्ध निषेध नहीं बल्कि प्रशंसनीय है। इस्लाम धर्म ने कुरआन और हदीस में अन्य समुदायों के बारे में असंख्य अधिकार निर्धारित किये हैं जिन पर अमल करके हम राष्ट्रीय सदभावना और धार्मिक उदारता जैसी विशिष्ट भावना को बढ़ावा दे सकते हैं निम्न पंक्तियों में ऐसी ही कुछ बिन्दुओं पर

प्रकाश डाला जा रहा है जिन के बारे में इस्लाम ने बताया है कि हमें गैर मुस्लिमों के हक़ में इन बातों का ध यान रखना चाहिये।

इस्लाम धर्म की यह शिक्षा है कि सभी इन्सान चाहे वह जिस कौम, धर्म या नस्ल से संबन्ध रखते हों वह एक मां बाप की औलाद और एक मानवीय समुदाय के रिश्ते में बंध ो हुये हैं। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''ऐ लोगो हमने तुम सबको एक ही मर्द और औरत से पैदा किया है और इसलिये कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो कुंबे और कबीले बना दिये हैं''। (सुरे हुजरात-१३)

इस्लाम ने पूरी मानवता को एक मां बाप की औलाद होने की जो अवधारण एवं विचार दिया है और जिस को कुरआन और हदीस में बार बर याद दिलाया गया है उसका भी यही अर्थ है कि एक विस्तृत मानवीय समुदाय का एहसास और पूरे इन्सान के भाई भाई होने की चेतना एवं विवेक पैदा हो। जैद बिन अरकम रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: '' मैं गवाही देता हूं कि सब बन्दे भाई भाई हैं'' (अबू दाऊद, मुसनद अहमद)

पवित्र कुरआन की दृष्टि में इन्सान एक सम्माननीय सृष्टि है।

अल्लाह तआला फरमाता है: ''यकीनन हमने आदम की औलाद को बड़ी इज्ज़त दी और उन्हें खुश्की और तरी की सवारियां दी और उन्हें पाकीज़ा चीजों की रोज़ियां दी और अपनी बहुत सी मख्लूक (सृष्टि) पर उन्हें फजीलत (श्रेष्ठता) प्रदान की''। (सूरे बनी इस्राईल-७०)

इस्लाम धर्म ने इन्सान को बुनियादी तौर पर मानवता के आधार पर सम्माननीय प्रेम और हमदर्दी का पात्र बताया है। कैस बिन सअ्द और सहल बिन हनीफ रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक बार अल्लाह के सन्देष्टा की सभा में कुछ सहाबा (आप के साथी) मौजूद थे कि एक जनाज़ा गुज़रा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गये। लोगों ने देखा कि अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जनाज़ा के सम्मान में खड़े हो गये। आपके साथियों ने बताया कि यह यहूदी का जनाज़ा है। आप ने कहा कि क्या यह प्राण इन्सान नहीं? आप स०अ०व० के बाद कुछ सहाबा इस पर अमल भी किया करते थे। (मुस्लिम९६०)

इस्लाम चाहता है कि इन्सान दयावान हो, उसके अन्दर प्रेम, मुहब्बत, सहयोग, हमदर्दी, सौहार्द की भावना कूट कूट कर भरी हो, उसके चरित्र एवं व्यवहार से दयालुता, करूणा का प्रदर्शन हो। यही वजह है कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने मुसलमानों को दयालुता की शिक्षा दी है। अब्दुल्लाह बिन अम्र बयान करते हैं कि अल्लाह के प्यारे सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया दया करने वालों पर अल्लाह भी दया करता है, अतः तुम धरती वालों पर दया करो, तुम पर आकाश वाला (ईश्वर) भी दया करेगा। (तिर्मिज़ी, १९४२ शैख अलबानी ने सहीहा ९२२ में सहीह करार दिया है)

❑ ❑ ❑

प्रसिद्ध आलिमेदीन एवं खतीब मौलाना अब्दुश शकूर असरी साहब का निधन

दिल्ली, ३० दिसम्बर २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने उत्तर भारत की प्राचीन धार्मिक पाठशाला जामिया असरिया दारूल हदीस मऊ के पूर्व कुलपति, प्रसिद्ध आलिमे दीन एवं खतीब और अध्यापकों के अध्यापक मौलाना अब्दुश शकूर असरी साहब के निधन पर गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और उनके निधन को देश, समुदाय और जमाअत का बड़ा ख़सारा क़रार दिया है।

उन्होंने कहा कि मौलाना अब्दुश शकूर को अल्लाह ने बड़ी खूबियों से सम्मानित किया था। आप बड़े मिलनसार और चरित्रवान थे। जीवन भर शिक्षा, प्रशिक्षण और दावत व सुधार के काम से जुड़े रहे। अल्लाह ने आप को बड़ी मकबूलियत दी। आप सफल अध्यापक होने के साथ बाकमाल खतीब भी थे और देश भर में आप की तकरीरों को बड़ी अहमियत और रूचि से सुना जाता था। आप की प्रारंभिक शिक्षा पैत्रिक भूमि के प्राइमरी और क्षेत्र के कई मदर्सों में हुई फिर उत्तर भारत की प्राचीन पाठशाला जामिया असरिया मऊ में दाखिल हुए और महान व अनुभवी ओलमा से ज्ञान प्राप्त किया इस दौरान उन्होंने इलाहाबाद अरबी फारसी बोर्ड की सभी परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। आप की योग्यता को देखते हुए मदर्सा प्रबन्धन ने फरागत के बाद आप को अध्यापक की हैसियत से संबद्ध कर लिया। २०१४ में मदर्सा के कुलपति के पद से रिटायरमेन्ट के बाद मई २०१८ तक कुलपति के पद पर विराजमान रहे इस लंबी मुददत में पठन-पाठन के अलावा खिताबत व दावत का काम भी अंजाम देते रहे आप से लाभान्वित होने वालों की बड़ी तादाद है जो आप के लिये सद-कए जारिया हैं इन्शाअल्लाह

अमीर महोदय ने कहा कि मुझे भी मऊ में शिक्षा के दौरान मौलाना से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला। आप बड़ी मेहनत और लगन से पढ़ाते और बड़ा प्रेम भाव का व्यवहार करते थे और मर्कज़ी जीमअत अहले हदीस हिन्द की गतिविधियों से बड़ी रूचि लेते थे और मुलाक़ात के दौरान मर्कज़ी जमीअत की उपलब्धियों पर खुशी व्यक्त करते और दुआएं देते थे, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की आल इंडिया कांफ्रेन्स में बड़े एहतमाम से शिर्कत करते थे। इधर काफी दिनों से बीमार थे अन्ततः ३० दिसंबर २०२१ को सुबह को बनकटवा बलराम पुर यूपी में लगभग ७० साल की आयू में निधन हो गया। उनका निधन धार्मिक व ज्ञानात्मक जगत का महान ख़सारा है। उसी दिन पैत्रिक भूमि बन्कटवा बलरामपुर में उनकी तदफीन हुई। जिसमें बड़ी तादाद में लोगों ने शिर्कत की। अल्लाह उनकी मग्फिरत फरमाये और परिवारजनों को सब्र की क्षमता प्रदान करे आमीन। (प्रेस रिलीज का सारांश)

आंखों की अहमियत

शफी मुहम्मद एडवोकेट

अल्लाह ने इन्सान को बेशुमार नेमतें दी हैं इन्हीं नेमतों में से एक नेमत आंख भी है जो अल्लाह की एक बड़ी नेमत है। कल्पना कीजिए कि अगर यह आखें न होतीं तो इन्सान की ज़िन्दगी कितनी अजीरन हो जाती, आख न होने से इन्सान अन्य नेमतों से लाभान्वित होने से वंचित रह जाता, जीवन गुज़ारना कितना मुश्किल हो जाता, कुदरत के सौन्दर्य दृष्य हम आखों की बदौलत ही देख पाते हैं। आखों की अहमियत का अंदाज़ा हम किसी नाबीना (अंधे) व्यक्ति को देख कर कर सकते हैं। इस दुनिया में जो भांति भांति की विभिन्न चीज़ें नज़र आ रही हैं वह सब आंखों का ही करिश्मा है जब हम कोई चीज़ खाते या पीते हैं तो आखों से ही पता चलता है कि खाने पीने की चीज़ में कोई तिनका तो नहीं पड़ा हुआ है। इसी लिये अल्लाह तआला ने आंखों की अहमियत का एहसास दिलाते हुए फरमायाः

''क्या हम ने उस की दो आंखें नहीं बनाईं'' (सूरे बलद-८)

आंख है तो जहान है। इस बड़ी नेमत के लिये हमें अल्लाह का शुक्र अदा करते रहना चाहिए।

नवाज़ा जिसने इसको नेमतों से
शुक्र वाजिब है मुझ पर उस खुदा का (लेखक)

आखों की हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है मगर हमें इन का प्रयोग बेहतर तरीके से करना चाहिए, हमें आखों से दूसरों के ऐब और कमियों को नहीं टटोलना चाहिए दूसरों की भलाई और अपनी बुराई पर नज़र रखनी चाहिए अगर हम ऐसा करेंगे तो हमें कोई बुरा नज़र नहीं आएगा।

न थी हाल की हमें अपने खबर देखते औरों के ऐब व हुनर
जब पड़ी अपनी बुराइयों पर नज़र तो नज़र में कोई बुरा न रहा
(बहादुर शाह ज़फर)

अल्लाह ने हमें आंख दी हैं तो हमें अपने बच्चों की शिक्षाओं पर भी नज़र रखनी है बिना शिक्षा के विकास करना असंभव है, शिक्षा के बिना न हम अपना विकास कर सकते हैं और न अपने देश के विकास में सहायक और मददगार हो सकते हैं। हमें अपनी आंखों से समाज के उन पिछड़े लोगों पर भी नज़र डालनी चाहिए जो अपनी गरीबी और निर्धनता के कारण दो वक़्त की रोटी का भी प्रबन्ध नहीं कर पाते।

इसी प्रकार हमें गरीबों, बेवाओं, अनाथों, और परेशान हाल लोगों पर ध्यान आकर्षित करना चाहिए, दीनी मदारिस और मकातिब का संचालन हमारे सहयोग के बिना संभव नहीं है।

पवित्र कुरआन में अपनी आखों को सुरक्षित रखने का आदेश दिया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया हैः

''मुसलमान मर्दों से कहो कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफाज़त करें'' (सूरे नूर-३०)

''मुसलमान औरतों से कहो कि वह भी अपनी निगाहों नीची रखें और अपनी इसमत में फर्क़ न आने दें'' (सूरे नूर-३१)

अल्लाह ने हमें आंखें इस लिये दी हैं कि हम अच्छे और बुरे में अन्तर करें। सारांश यह है कि हमें अपनी आंखों का गलत स्तेमाल नहीं करना चाहिए।

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए
मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान